



# 1857 Revolt in Madhya Pradesh

Complete Course on Madhya Pradesh General Studies - Part I

# Contribution of Madhya Pradesh in Revolt of 1857

Shahgarh King led the revolution in Sagar district, Banpur King



# Mutiny in Madhya Pradesh / मध्य प्रदेश में विद्रोह

## Neemuch / नीमच

- Neemuch cantonment was the Southern most point of Revolt / नीमच छावनी विद्रोह का सबसे दक्षिणतम बिन्दु था
- On 2<sup>nd</sup> June **Colonel Abbot** forced soldier to took pledge of Loyalty but one of the soldier **Ali Baig** angered and revolted / 2 जून 1858 को कर्नल अबोट ने सैनिको से वफादारी की शपथ दिवालाई लेकिन उसी दौरान एक सैनिक आली बैग ने बगावत कर दी
- On 3<sup>rd</sup> of June 1857 revolt broke out in the cantonment / 3 जून को सैनिको ने विद्रोह कर दीया
- A brigade of native Bengal troops were stationed at Neemuch, then mutinied and marched to Delhi  
निमच मे स्थित बंगाल सेना ने विद्रोह करके दिल्ली का रुख कर लिया
- **Captain Shavers** reached Neemuch and tried to suppress revolt / कप्तान शवेर्स नीमच पहुँचकर विद्रोह दबाने का प्रयास करते है
- On 8<sup>th</sup> of June British get control of Chhavani / अंततः 8 जून को छावनी पर नियंत्रण पा लिया गया

# Mhow Cantonment and Indore / महू छावनी और इंदौर

- Date- 1st July 1857
- Leader **Shahadat Khan, Bhagirath Silavat and Vansh Gopal** attacked on Indore Residency with the help of Holkar Kings on the same day revolt spread in MHOW Chhavani
- 1 जुलाई 1857 को शहादत खान भागीरथ सिलावट वंश गोपाल के तहत विद्रोही सैनिकों ने इंदौर रेजीडेंसी पर हमला किया, उसी दिन होल्कर किंग्स की मदद से एमएचओ छावनी में विद्रोह फैल गया
- The leader of the rebels in Mhow was **Murad Ali**, the rebels of Indore and Mhow looted ₹ 900000 from the residency.
- महू में विद्रोहियों का नेता मुराद अली था इंदौर और महू के विद्रोहियों ने रेसिडेंसी से ₹900000 लूट लिए
- Lord Elphinstone was Resident of Indore at that time / लॉर्ड एल्फिन्स्टन उस समय इंदौर के निवासी थे
- Some soldiers came from Neemuch via MHOW-NEEMUCH road gave motivation to the soldiers / कुछ सैनिक नीमच से महू-नीमच सड़क मार्ग से आए और सैनिकों को प्रेरणा दी

# Mhow Cantonment and Indore / महू छावनी और इंदौर

- Finally on 15<sup>th</sup> December 1857 British manage to entered in Indore and Mhow  
15 दिसम्बर 1857 को अंग्रेजो ने महू और इंदौर पर पुनः नियंत्रण पाया
- Saadat khan was fled away, he was captured after 17 years
- सादत खान वहाँ से बच निकले और 17 वर्ष बाद अंग्रेज उन्हे पकड़ पाये
- He was hanged on Banyan tree in Indore Residency area
- उन्हे इंदौर मे एक बरगद के पेड़ से लटकाकर फांसी दे दी गयी
- After the rebellion in Indore, the soldiers reached **Biawara** via Dewas, Maxi, Shajapur.
- इंदौर में विद्रोह के पश्चात सैनिक देवास, मक्सी, शाजापुर होते हुए ब्यावरा पहुंचे।
- From there, Raja Ajit Singh of Raghogarh supported them and the soldiers of Gwalior revolted in Murar (Gwalior) on 30 July. / वहां से राघोगढ़ के **राजा अजीत सिंह** ने इनका सहयोग किया तथा 30 जुलाई को मुरार पहुंचे मुरार (ग्वालियर) की रात ग्वालियर के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।



## Revolt in Mandsaur / मंदसौर में विद्रोह

- **Shahzada Feroz**, a descendant of the Mughal emperor Bahadur Shah I, led a revolt against the British at Khachrod near Mandsaur.
- मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम के वंशज शहजादा फिरोज ने मंदसौर के निकट खाचरोद में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।
- Rebel declared Feroz as a Emperor on 23 November 1857

## Mutiny at Gwalior: Tantya Tope / ग्वालियर में विद्रोह: तात्या टोपे

- After the rebellion in Indore, the soldiers reached **Biaora** via Dewas, Maxi Shajapur, from there Raja Ajit Singh of Raghogarh supported them and reached the Murar.
- इंदौर में विद्रोह के पश्चात सैनिक देवास मक्सी शाजापुर होते हुए ब्यावरा पहुंचे वहां से राघोगढ़ के राजा अजीत सिंह ने इनका सहयोग किया
- Soldiers revolted on 30 July in **Murar**/30 जुलाई को मुरार में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया
- Scindhia king **Jeevaji Rao Scindia**, supported the British.
- सिंधिया राजा जीवाजी राव सिंधिया ने अंग्रेजों का समर्थन किया।
- In contrast, his grandmother **Baijabai Scindia** supported the rebel
- इसके विपरीत, उनकी दादी बैजबाई सिंधिया ने समर्थन किया
- Baijabai was indirectly conducting the rebellion in Ujjain and Gwalior.
- बैजाबाई उज्जैन व ग्वालियर में विद्रोह को अप्रत्यक्ष रूप से संचालित कर रही थी।

## Mutiny at Gwalior: Tantya Tope / ग्वालियर में विद्रोह: तात्या टोपे

- In November 1857, a large number of Gwalior soldiers moved towards Kalpi and attacked the Scindia army.
- नवंबर 1857 में बड़ी संख्या में ग्वालियर के सैनिक कालपी की ओर चले गए और सिंधिया सेना के खिलाफ हमला बोल दिया।
- Laxmibai moved on to Gwalior and occupied the fort of Gwalior
- लक्ष्मी बाई ग्वालियर आकार किले पर कब्जा कर लेती है
- But on 17 June, 1858, she died in the battle./17 जून 1858 को युद्ध में गोली लगने से उनकी मृत्यु हो जाती है
- The British captured Gwalior three days later.
- Gwalior captured by Sir Colin Campbell on the 6th of December.
- After death of rani, Tantya Tope fled to Shivpuri and later captured and executed in 1859.
- रानी की मृत्यु के बाद, टात्या टोपे शिवपुरी चले गए और बाद में 1859 में पकड़ लिया गया और उसे मार दिया गया।

## Mutiny at Jhansi – Rani Laxmi Bai / झांसी में विद्रोह - रानी लक्ष्मी बाई

- After death of **Gangadhar Rao Newalkar**, King of Jhansi, Dalhousie ordered to captured Jhansi under Doctrine of Lapse
- झांसी के राजा जगन्नाथ राव की मृत्यु के बाद, लॉर्ड डलहोजी ने झांसी को हड़प नीति के तहत अङ्ग्रेजी हुकूमत मे मिलाने का निर्णय लिया
- On 8 June, the British were killed by rebels in **Jhokan Bagh, Jhansi.**
- 8 जून को झांसी के झोकन बाग में अंग्रेजों को विद्रोहियों ने मौत के घाट उतार दिया।
- **Raja Mardan Singh, Shahgarh king bakhatwali** met Rani Laxmibai of Jhansi to form a dangerous triangle of British opposition in Bundelkhand.
- बानपुर के राजा मर्दन सिंह शाहगढ़ राजा बखत वाली ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से मिलकर बुंदेलखंड में अंग्रेज विरोध का एक खतरनाक त्रिकोण का निर्माण किया ।

## Mutiny at Jhansi – Rani Laxmi Bai / झाँसी में विद्रोह - रानी लक्ष्मी बाई

- Rani Proclaimed his adopted son Anand Rao as a King of Jhansi

रानी ने अपने दत्तक पुत्र को राजा घोषित कर दिया

- Jhansi was relatively calm in 1857, but British troops arrived under Hugh Rose and laid siege to Jhansi on **23 March 1858** and asked Laxmi Bai to surrender

1857 में झाँसी शांत था लेकिन 23 मार्च 1858 को ह्यूज रॉस ने रानी को आत्मा समर्पण करने के आदेश दिये

- Later her army was joined by Tantya Tope's troops, but the British were able to capture Jhansi by 31 March

बाद में रानी ने तात्या टोपे की सेना की मदद ली लेकिन 31 मार्च को अंग्रेजों ने झाँसी पर कब्जा कर लिया था

## Mutiny at Jhansi – Rani Laxmi Bai / झांसी में विद्रोह - रानी लक्ष्मी बाई

- Laxmibai moved on to Gwalior and occupied the fort of Gwalior  
लक्ष्मी बाई ग्वालियर आकार किले पर कब्जा कर लेती है
- But on 17 June, 1858, she died in the battle./ 17 जून 1858 को युद्ध में गोली लगने से उनकी मृत्यु हो जाती है
- The British captured Gwalior three days later./ 3 दिन के बाद अंग्रेजों ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया
- Her father, **Moropant Tambey**, was captured and hanged a few days after the fall of Jhansi.
- झांसी के पतन के कुछ दिनों बाद उनके पिता, मोरोपंत ताम्बे को पकड़ लिया गया और उन्हें फांसी दे दी गई।
- Anand Rao, was given a pension by the British Raj/आनंद राव को पेंशन दे दी गयी

## Mutiny in Amjhera / अमझेरा में विद्रोह

- Leader- King Bakhtawar Singh Rathore
- अमझेरा के राजा बख्तावर सिंह राठोड ने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत कर दी, उन्हें गिरफ्तार कर इंदौर के MTH compound में सार्वजनिक फांसी दी गयी
- Entire State of Amjhera was at that time under Gwalior State's Territory
- अमझेरा का पूरा राज्य उस समय ग्वालियर राज्य के क्षेत्र के अंतर्गत था
- King revolted after Mutiny of Indore and Mhow/इंदौर और महु में विद्रोह के बाद राजा ने भी विद्रोह कर दिया
- On 3<sup>rd</sup> of July Deewan of Amjhera Gulab singh attacked on Bhopawar  
3 जुलाई को अमझेरा के दीवान गुलाब सिंह भोपर पर हमला कर देते हैं
- Mutinied army looted British Agency and destroyed Govt. documents  
बगावती सेना ब्रिटिश एजन्सि को लूट कर सरकारी कागजात जला दिए



## Mutiny in Amjhera(Dhar) / अमझेरा (धार) में विद्रोह

- They captured Political Agent Hutchison but after intervene of Holkar king, he was released
- वो ब्रिटिश एजेंट हचिसन को गिरफ्तार कर लेते है लेकिन होल्कर राजा के दखल के बाद छोड़ दिया जाता है
- But later Army of British under **Captain Durand** captured Amjhera and on 8<sup>th</sup> November 1857 Bakhtawar singh was arrested
- 8 नवम्बर को कप्तान दुरंड की सेना बगावत को कुचल कर बख्तावर सिंह को गिरफ्तार कर लेती है
- ब्रिटिश सेना के ए जी जी राबर्ट हेमिल्टन ने महाराजा को असीरगढ़ के किले में कैद की सजा सुनाई थी लेकिन बाद में इसे बदलकर फांसी की सजा कर दिया। 10 फरवरी 1858 को प्रातः नौ बजे इन्दौर में उन्हें फांसी दी गई।

## Mutiny in Dhar / धार में विद्रोह

- On 23<sup>rd</sup> May 1857 king of Dhar Raja jaswant singh Pawar passed away
- 23 मई 1857 को धार के राजा जसवंत सिंह पवार का देहांत हो जाता है
- Before death he adopted 13 year old Anand Rao pawar
- मृत्यु के पहले वो आनंद राव नमक बालक को गोद ले लेते है
- Army of Dhar revolted against British and captured Dhar fort on 31<sup>st</sup> August 1857 but **king remain loyal to British**
- धार के सैनिक 31 अगस्त 1857 को धार के किले पर कब्जा कर लेते है, लेकिन फिर भी **राज परिवार ब्रिटिश के प्रति वफादार रहता है**
- Fort was completely in control of Mutinied Sepoy/किले पूरी तरह से विद्रोही सिपाही के नियंत्रण में था  
Captain durand attacked on fort and captured on 31<sup>st</sup> October 1857
- दुरंड अपनी सेना की मदत से 31 ओक्टोबर को धार का विद्रोह कुचल देता है

## Mutiny in Jabalpur / जबलपुर में विद्रोह

- Successor of Gadha kingdom Shankar Shah(70 years) and Raghunath Shah (40 years) resides in **Purva fort of Jabalpur**
- गढ़ा राज्य के उत्तराधिकारी शंकर शाह (70 वर्ष) और रघुनाथ शाह (40 वर्ष) जबलपुर के पुरवा किले में रहते हैं
- In Jabalpur, on 16 June 1857 one Indian Sepoyee attacked a British officer.
- जबलपुर में, 16 जून 1857 को एक भारतीय सिपाही ने एक ब्रिटिश अधिकारी पर हमला किया।
- Shahnkar shah and Raghunath Shah with the help of Indian officers of 52<sup>nd</sup> Regiment planned to revolt.
- 52 वीं रेजिमेंट के भारतीय अधिकारियों की मदद से शाहनकर शाह और रघुनाथ शाह ने विद्रोह करने की योजना बनाई।
- But British easily tract their activities and arrested them.
- लेकिन ब्रिटिशों ने उनकी गतिविधियों को आसानी से ट्रैक किया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
- After arrest 52<sup>nd</sup> Regiment planned to released them but British Killed both of them by tied on Cannon.
- गिरफ्तारी के बाद 52 वीं रेजिमेंट ने उन्हें रिहा करने की योजना बनाई लेकिन ब्रिटिश ने दोनों को तोप से बांधकर मार डाला।

## Mutiny in Jabalpur / जबलपुर में विद्रोह

- After blowing Shankar Shah with a cannon, his wife Rani Phool Kunwar fled and came to Mandla and raised the army and rebelled against the British.
- शंकर शाह को तोप से उड़ाने के बाद उनकी पत्नी रानी फूल कुंवर भागकर मंडला आ गई और सेना खड़ी कर अंग्रेजों से विद्रोह किया।

## Mutiny in Mandla / मंडला में विद्रोह

- Avanti Bai was married to Vikramjit, son of Ramgarh King Laxman Singh.
- अवंती बाई का विवाह रामगढ़ राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमजीत से हुआ था।
- After killing of **Shankar shah** (King of Mandla) by Britisher Rani decided to Revolt  
अंग्रेजों द्वारा शंकर शाह (मंडला) की हत्या के बाद रानी ने विद्रोह कर दिया
- Rani Avanti Bai formed a triangle against the British along with **Lodhi Thakur Vijay Singh of Shahpur and Baghel Thakur Arun Singh of Sohagpur.** / रानी अवंती बाई ने शाहपुर के लोधी ठाकुर विजय सिंह एवं सोहागपुर के बघेल ठाकुर अरुण सिंह के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध त्रिकोण का निर्माण किया।
- Rani captured Mandla /रानी ने मंडला पर कब्जा कर लिया
- **Wellington** with the help of **Reewa king** attacked on **Mandla and Ramgarh**
- वेलिंगटन रीवा के राजा की मदद से मंडला और रामगढ़ पर आक्रमण कर जीत लेता है
- Rani was helped by her guard **Girdhari Bai** /रानी को उनकी गार्ड गिरधारी बाई ने मदद की थी
- Rani killed herself on **20<sup>th</sup> March 1858** /20 मार्च 1858 को रानी ने खुद को मार लिया

## Revolt in Sagar / सागर में विद्रोह

- On July 1, 1857, **Ramajan and Dulmir Amir Khan**, senior subedars of 42 foreign platoons, proclaimed the revolution in Sagar by playing the drum at the gate of the mosque.
- सागर में क्रांति का ऐलान 1 जुलाई 1857 को 42 विदेशी पलटन के सीनियर सूबेदार रमजान व दुल्मिर अमीर खान ने मस्जिद के द्वार पर नगाड़ा बजाकर किया।
- Shahgarh King **Bakhat Bali** led the revolution in Sagar district, Banpur King **Mardan Singh** attacked Sagar Fort twice on 25 July and 17 September but could not break the fort.
- शाहगढ़ राजा बखत बलि ने सागर जिले में क्रांति का नेतृत्व किया बानपुर राजा मर्दन सिंह ने 25 जुलाई को एवं 17 सितंबर को दो बार सागर के किले पर आक्रमण किया मगर किला नहीं तोड़ सके।
- His commanders Bodhan Dua and Mardan Singh occupied the area around Sagar.
- बखत वाली उनके सेनापति बोधन दुआ एवं मर्दन सिंह ने सागर के आसपास के इलाके पर कब्जा कर लिया।

## Mutiny in Sehore / सीहोर में विद्रोह

- Sehore remained the headquarters of the political agent and resident of the British  
सीहोर ब्रिटिश राजनैतिक एजेंट और रेजिडेंट का स्थान रहा
- Mahavir kotha and wali shah introduce "**Nishan-e- Mahaviri and Nishan -e- Mohammadi**"  
remained furling in the place of Union Jack  
1857 की क्रांति के समय आजादी के परवानो ने यूनियन जैक निकाल कर निशान-इ- महावीरी और निशान-इ-मोहम्मदी झंडा सरकारी दफ्तरों पर लगाया
- Nawab brothers **Fazil Mohammad Khan Adil Mohammad Khan** of Ghari Ambapani, located near Raisen princely state, also supported Mahavir and Ali Shah, who built a new rule in the name of Sipahi Bahadur.
- रायसेन रियासत के पास स्थित घड़ी अंबापानी के नवाब बंधु फाजिल मोहम्मद खान आदिल मोहम्मद खान ने भी महावीर व अली शाह का साथ दिया इन्होंने **सिपाही बहादुर** के नाम से एक नई हुकूमत का निर्माण किया

## Mutiny in Sehore / सीहोर में विद्रोह

- Many British Official from Indore fled to Sehore, where **Begam Sikandara** helped them  
कई ब्रिटिश अधिकारी इंदौर से भाग कर सीहोर आ गए जहा बेगम सिकंदरा ने उनकी मदत की
- Sir **Hurose and Robert Hamilton** crushed the uprising/सर हुरोसे और रोबर्ट हैमिलटन ने बगावत दबाई
- **Nawabs of Bhopal remained always loyal to the British./भोपाल के नवाब हमेशा अंग्रेजों के वफादार रहे।**
- Mahavir and Wali Shah of Bhopal also led the revolution./भोपाल के महावीर और वाली शाह ने भी क्रांति का नेतृत्व किया।
- Nawab Bandook Dil Mohammed Khan and Adil Mohammad Khan of Ambapani located near Raisen princely state also supported Mahavir Bhavan Shah.
- रायसेन रियासत के पास स्थित अंबापानी के नवाब बंदूक दिल मोहम्मद खान एवं आदिल मोहम्मद खान ने भी महावीर भवन शाह का साथ दिया।
- Mahavir and Wali Shah formed a new ruling soldier Bahadur.
- महावीर और वली शाह ने एक नई हुकूमत सिपाही बहादुर का गठन किया।

## Revolt in sagar / सागर में विद्रोह



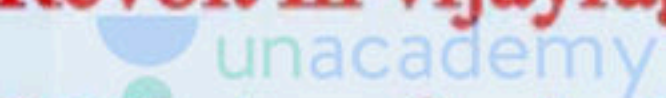
- Rahatgarh near Sagar is called the gate of Sagar. The revolution in Rahatgarh was led by Gadha Ambapani's Nawab brothers **Fazil Mohammad Khan and Nawab Adil Mohabbat Khan**.
- सागर के निकट राहतगढ़ को **सागर का द्वार** कहा जाता है राहतगढ़ में क्रांति का नेतृत्व घड़ी अंबानी के नवाब भाई फाजिल मोहम्मद खान एवं नवाब आदिल मोहब्बत खान ने किया।
- Huroz came Rahatgarh but on 28 February 1858. he besieged Rahatgarh and hanged Fazil Mohammed at the entrance of the fort.
- हुरोज़ राहतगढ़ आया था, लेकिन 28 फरवरी 1858 को उसने राहतगढ़ को घेर लिया और फाजिल मोहम्मद को किले के प्रवेश द्वार पर लटका दिया
- **Adil Mohammad Khan joined Tatya Tope** and helped Rani of Jhansi./आदिल मोहम्मद खान तात्या टोपे से जा मिला और झांसी की रानी की मदद की।
- By the last week of 1859, serious efforts were made to attack the rebel parties of the British forces, whose leader was Adil Mohammad Shah, but failed.
- 1859 के अंतिम सप्ताह तक ब्रिटिश सेनाओं के विद्रोही दलों पर जिनका नेता आदिल मोहम्मद शाह था आक्रमण करने के लिए गंभीर प्रयास किए किंतु विफल रहे।

- At the end of September 1859, Adil Mohammad surrendered, but escaped from there.
- सितंबर 1859 में के अंत में आदिल मोहम्मद आत्मसमर्पण कर दिया, लेकिन वहां से भी भाग निकला।

### **Revolt in Damoh / दमोह में विद्रोह**

- The 42nd infantry of Damoh raised the flag of rebellion. The leader of the rebellion in Damoh was **Kishore Singh**, the zamindar brother of Hindoria, who was greatly helped by the King of Shanpur, Shankar Shah Raghunath Shah.
- दमोह की 42वीं पैदल सेना ने विद्रोह का झंडा बुलंद किया दमोह में विद्रोह के नेता हिंडोरिया के जमीदार भाई किशोर सिंह थे जबलपुर के कौन राजा शंकर शाह रघुनाथ शाह से इन्हें काफी मदद मिली।

## Revolt In vijayraghogarh / विद्रोह इन विजयराघोगढ़



- **Thakur Sarju Prasad**, the young man of Vijayaraghavgarh revolted with his 30,00 companions, in which two of his commanders, **Sardar Rambol and Vandan Chacha**, fought.
- विजयराघवगढ़ के नवयुवक ठाकुर सरजू प्रसाद ने अपने 30,00 साथियों के साथ विद्रोह किया जिसमें उनके दो सेनापति सरदार रामबोल व वंदन चाचा ने संघर्ष किया।
- After him Rambol's wife **Naini** took over the operation of the war but was killed by the British.
- उनके बाद रामबोल की पत्नी नईनी ने युद्ध का संचालन अपने हाथों में लिया लेकिन अंग्रेजों द्वारा उन्हें मार दिया गया।

## Hoshangabad

- **Thakur Daulat Singh and Pandit Baba Saheb** led the rebellion in Hoshangabad. The center of their activities was nemavar, Deputy Commissioner of Hoshangabad suppressed their rebellion and hanged them.
- होशंगाबाद में ठाकुर दौलत सिंह एवं पंडित बाबा साहब ने विद्रोह का नेतृत्व किया उनकी गतिविधियों का केंद्र हड़ताल नेमावर था, होशंगाबाद के डिप्टी कमिश्नर ने इनके विद्रोह का दमन कर इन्हें फांसी पर चढ़ा दिया।

## Baitul

- The rebellion in Betul district started with the arrest of Ramdeen Patel and Shubhdin Patel brothers.
- बेतूल जिले में विद्रोह का आरंभ पटेल बंधु शुभ दिन रामदीन पटेल की गिरफ्तारी से हुआ।

## Balaghat

- The rebellion in Balaghat was led by Kamata's vassal **Chimna Patel**, who defeated Captain Garden.
- बालाघाट में विद्रोह का नेतृत्व कामता के जागीरदार **चिमना पटेल** ने किया इन्हें कैप्टन गार्डन पराजित किया।

## Satna

- Thakur Ranmat Singh of Kothi Jagir of Baghelkhand rebelled against the British.
- Daulat Singh of Daboh and Barjor Singh of Billia took the leadership in Datia.
- दतिया में नेतृत्व दबोह के दौलत सिंह व बिलिया के बरजोर सिंह ने किया।

- Maharaja Raghuraj Singh of Rewa joined the British in suppressing the rebellion of Baghelkhand and Kunwar Singh of Jagdishpur with his 5000 soldiers marched towards Rewa but was defeated by the British.
- रीवा के महाराज रघुराज सिंह ने बघेलखंड के विद्रोह के दमन में अंग्रेजों का साथ दिया उन्हें पराजित करने जगदीशपुर के कुंवर सिंह अपने 5000 सैनिकों के साथ रीवा की ओर बढ़े लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें हरा दिया।
- The ruler of Nagaud, Raghavendra Singh, helped the British,
- नागौद के शासक राघवेंद्र सिंह ने अंग्रेजों की मदद की
- Raja Ranchhod Singh of Ajay Garh heritage was a help to the British.
- अजय गढ़ विरासत का राजा रणछोड़ सिंह अंग्रेजों का मददगार था।
- The Rani Ladai Sarkar of Tikamgarh helped the British.
- टीकमगढ़ की रानी लड़ाई सरकार ने अंग्रेजों की मदद की।



# Contribution of Madhya Pradesh in Freedom Movement

# The rise and development of nationalism in Madhya Pradesh



- First phase (1818 to 1885)
- Second Stage (1885 to 1905)
- Phase III (1905 to 1919)
- Phase IV (1919 to 1947)

## First phase (1818 to 1885)

1. Bhil Rebellion 1818
2. Revolt of Kunwar Chain Singh (1824)
3. The beginning of the Renaissance movement was Swami Dayanand Saraswati and Raja Ram Mohan Roy (1828)
4. Bundela Rebellion 1842
5. Freedom struggle of 1857
- 6 From 1857 to 1885, local revolts continued to challenge the British in many areas of Madhya Pradesh.

## **Second Phase (1885 to 1905)**

- The Indian National Congress was established in this period and many leaders of Madhya Pradesh traveled around the country to participate in it.

## **Third Phase (1905-1918)**

### **• Fourth phase (1919 to 1947)**

- At this time flag satyagraha, jungle satyagraha, individual satyagraha, establishment of Swaraj Dal, labor movement, peasant movement, civil disobedience movement, non-cooperation movement, Prajamandal movement, Quit India movement

# Phase I

unacademy

## भील विद्रोह 1818

- विंध्यांचल से लेकर सहयाद्री तक का अंचल भीलों का पुराना वासस्थान रहा है। वे स्वयं अपनी जमीनों के स्वामी थे।
- पहाड़ों के भील अपने जीवन की रक्षा के लिए आसपास के धनी जमींदारों को लूट भी लिया करते थे।
- अरब सूबेदारों ने उनको तबाह कर दिया था। **बाजीराव द्वितीय** के पेशवा बनने के बाद जसवंतराव होल्कर ने विद्रोह किया तो मराठा सेना ने आकर भीलों की बस्तियाँ उजाड़ दीं।
- 1816 में पिंडारियों ने पूर्वी पहाड़ियों के मुसलमान भीलों की मदद से इन भीलों पर ऐसे जुल्म ढाये कि उनके सामने मराठों और अरबों के जुल्म फीके पड़ गये।
- इन अत्याचारों से बचने के लिए भीलों ने भाग कर पहाड़ियों में शरण ली।
- **1817 में खानदेश** में भीलों का विद्रोह हुआ। अंग्रेजों ने इस विद्रोह के पीछे पेशवा के **मंत्री त्रयम्बक** का हाथ बताया।
- 1818 में खानदेश के अंग्रेजों के हाथ आते ही भील उनसे भिड़ गये। अंग्रेजों ने उनके दमन के लिए सक्रिय कदम उठाये। उन्हें पेंशन का प्रलोभन दिया। किंतु फिर भी भील अजेय बने रहे।

- इस समय प्रदेश में पेशवा, भोंसले, होल्कर, सिंधिया, उमटवाड़ आदि लगभग सभी रियासतों में अंग्रेजों की दमनकारी नीति के कारण राष्ट्रियता की लहर सुदूर अंचलों में फैल गई थी।
- 1831 में धार राज्य के भीलों ने विद्रोह किया। 1846 में मालवा के भीलों ने विद्रोह किया।
- खानदेश के भीलों ने 1852 में मोर्चा लगाया।
- फिर उन्होंने 1857 में भागोजी तथा काजर सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों से लोहा लिया।

# Revolt of Kunwar Chain Singh (1824)

- देश में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ पहली सशस्त्र क्रांति का पहला शहीद मंगल पांडे को माना जाता है।
- मगर कुंवर चैन सिंह की शहादत मंगल पांडे के शहीद होने की घटना से भी करीब 33 वर्ष पहले की है जिन्हें **मालवा का मंगल पांडे** कहा जाता है।
- सन 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी और भोपाल के तत्कालीन नवाब के बीच हुए समझौते के बाद कंपनी ने सीहोर में एक हजार सैनिकों की छावनी बनाई।
- कंपनी द्वारा नियुक्त पॉलिटिकल एजेंट मैडॉक को इन फौजियों का प्रभारी बनाया गया। इस फौजी टुकड़ी का वेतन भोपाल रियासत के शाही खजाने से दिया जाता था।
- बाकी तो चुप रहे, लेकिन इस फैसले को **नरसिंहगढ़ रियासत के युवराज कुंवर चैन सिंह** ने गुलामी की निशानी मानते हुए स्वीकार नहीं किया।
- कुंवर चैन सिंह ने रियासत से गदारी कर रहे अंग्रेजों के पिटू **दीवान आनंदराम बख्शी और मंत्री रूपराम बोहरा** को मार दिया।
- एजेंट मैडॉक ने कुंवर चैन सिंह को भोपाल के नजदीक बैरसिया में एक बैठक के लिए बुलाया।



- बैठक में मैडॉक ने कुंवर चैन सिंह को दीवान आनंदराम बख्शी और मंत्री रूपराम बोहरा की हत्या के अभियोग से बचाने के लिए दो शर्तें रखीं।
- पहली शर्त थी कि नरसिंहगढ़ रियासत, अंग्रेजों की अधीनता स्वीकारे।
- दूसरी शर्त थी कि क्षेत्र में पैदा होनेवाली अफीम की पूरी फसल सिर्फ अंग्रेजों को ही बेची जाए।
- कुंवर चैन सिंह द्वारा दोनों ही शर्तें ठुकरा देने पर मैडॉक ने उन्हें 24 जून 1824 को सीहोर पहुंचने का आदेश दिया।
- ऐसा कहा जाता है कि युद्ध के दौरान कुंवर चैनसिंह ने अंग्रेजों की अष्टधातु से बनी तोप पर अपनी तलवार से प्रहार किया जिससे तलवार तोप को काटकर उसमें फंस गई।
- मौके का फायदा उठाकर अंग्रेज तोपची ने उनकी गर्दन पर तलवार का प्रहार कर दिया जिससे कुंवर चैन सिंह की गर्दन रणभूमि में ही गिर गई और उनका स्वामीभक्त घोड़ा शेष धड़ को लेकर नरसिंहगढ़ आ गया।
- मध्य प्रदेश सरकार ने वर्ष 2015 से सीहोर स्थित कुंवर चैन सिंह की छतरी पर गार्ड ऑफ ऑनर प्रारम्भ किया है।



## Second Phase (1885 to 1905)

- 1860 में भारत सरकार के आदेश से **मध्य प्रदेश चीफ कमिश्नरी** बनाया गया, जिसमें 19 जिले बनाए गए।
- ब्रिटिश फौजी अधिकारी विभागों के अधिकारी होते थे, उन्हीं को कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर बनाया गया।
- 1885 में '**कोर्ट एक्ट**' बना जिसके अनुसार आठ प्रकार के न्यायालय बनाए गए। कमिश्नर प्रमुख न्यायाधीश होता था जिसका केंद्र नागपुर में था।
- उसके बाद **जबलपुर कमिश्नर** का स्थान उप न्यायाधीश होता था।
- 1883 में स्थानीय स्वराज अधिनियम तथा काश्तकारी कानून पास किए गए इसके अनुसार **95 नगर निगम** व जिला परिषद की स्थापना।
- 1882 में मालगुजारी संहिता पास किया जिसके अनुसार क्षेत्रों में मालगुजार नहीं थे वहां जमा घोषित करने के लिए पटेल नियुक्त किए जाने का प्रावधान रखा गया।

## Second Phase (1885 to 1905)

- In 1860, **Madhya Pradesh Chief Commissionerate** was created by order of the Government of India, in which **19 districts** were created.
- British military officers were the officers of the departments, they were made commissioners and deputy commissioners.
- In 1885 the '**Courts Act**' was made, according to which eight types of courts were made.
- The commissioner was the chief justice with its center at **Nagpur**.
- After that the Jabalpur commissioner was replaced by a **sub-judge**.
- Local Swaraj Act and Tenancy Act were passed in 1883. According to this, **95 Municipal Corporations and Zilla Parishads** were established.
- In 1882, the **Revenue Code** was passed, according to which a provision was made to appoint **Patel** to declare deposits in areas where goods were not available.

## Second Phase (1885 to 1905)

- मध्यप्रदेश में सन् 1896-97 और सन् 1899 से 1900 में अकाल पड़ा।
- इस दौरान लोगों की ब्रितानी सरकार से प्रमुख शिकायतें थीं।

(1) लगान का अधिक होना

(2) शिक्षा और जंगल के कठोर कानून

(3) करों की अधिकता

(4) पुलिस का अत्याचार

(5) न्यायालयों में होने वाली असुविधा और खर्चीलापन।

- इनके विरुद्ध समय-समय पर समाचार पत्रों ने अपनी आवाजें उठाती रही हैं। इस समय मध्यप्रदेश में 16 प्रेस थे और उनकी निजी पत्र पत्रिकाएं निकलती थीं।

समाचार पत्र	स्थान
शुभ चिंतक	जबलपुर
सरस्वती विलास	नरसिंहपुर
मौजे नर्मदा	नर्मदापुरम
न्याय सुधा	हरदा
सुबोध सिंधु	खण्डवा
आर्य वैभव	बुरहानपुर
नागपुर कानून	नागपुर

## Second Phase (1885 to 1905)

- There was famine in Madhya Pradesh in the year 1896-97 and in the year 1899 to 1900.
- During this time people had major complaints with the British government.

(1) Excess of rent

(2) Education and harsh laws of the jungle

(3) Excess of taxes

(4) Police atrocities

(5) The inconvenience and cost of courts.

- Newspapers have been raising their voices against them from time to time. At this time there were **16 presses** in Madhya Pradesh and their private magazines were issued.

समाचार पत्र	स्थान
शुभ चिंतक	जबलपुर
सरस्वती विलास	नरसिंहपुर
मौजे नर्मदा	नर्मदापुरम
न्याय सुधा	हरदा
सुबोध सिंधु	खण्डवा
आर्य वैभव	बुरहानपुर
नागपुर कानून	नागपुर

## Second Phase (1885 to 1905)

### Rise of Congress in Madhya Pradesh

- The first session of the Indian National Congress was held in **Bombay** under the chairmanship of **Womesh Chandra Banerjee**, in which only 72 delegates were present. In this, the presence of any representative of Madhya Pradesh does not appear.
- The **second session** of the Congress was held in Calcutta, in which **V.K. Bose, Bapurao Dada Minkhede, Gangadhar Rao Chitnavis and Gopal Bhide** etc. were invited to attend the convention.
- All these invited representatives had participated in the Calcutta session, but **V.K. Bose** could not participate due to being a judge in the Nagpur Small Cause Court.
- During this time an organization named "**Lok Sabha**" was formed in **Nagpur**, whose president was **Gangadhar Rao Chitnavis**.
- A similar organization was established in Akola in 1886, in **which Devdas, Vinayak, Digambar, G.S. Khaparde, Mudholkar, M.B. Joshi and Qazi Baruddin** were members.

## Second Phase (1885 to 1905)

### मध्य प्रदेश में कांग्रेस का उदय

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन बम्बई में **वोमेश चन्द्र बनर्जी** की अध्यक्षता में हुआ जिसमें केवल 72 प्रतिनिधि उपस्थित थे। इसमें मध्यप्रदेश के किसी प्रतिनिधि का उपस्थित होना प्रकट नहीं होता।
- कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन **कलकत्ता** में हुआ, जिसमें मध्यप्रदेश के **व्ही.के. बोस**, **बापूराव दादा मिनखेड़े**, **गंगाधर राव चिटनवीस** तथा **गोपाल भिंडे** आदि को अधिवेशन में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया था।
- इन सभी आमंत्रित प्रतिनिधियों ने कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिया था, किन्तु **व्ही.के. बोस** नागपुर लघुवाद न्यायालय में न्यायाधीश हो जाने के कारण भाग नहीं ले सके थे।
- इसी दौरान नागपुर में "**लोकसभा**" नामक एक संगठन का निर्माण जिसके अध्यक्ष **गंगाधर राव चिटनवीस** थे।
- इसी तरह की एक संस्था सन् 1886 में स्थापित हुई, जिसमें अकोला के **देवदास**, **विनायक**, **दिगम्बर**, **जी.एस. खापर्डे**, **मुधोलकर**, **एम.बी. जोशी** तथा **काजी बरुद्दीन** इसके सदस्य थे।
- सन् 1891 में कांग्रेस का **सातवाँ और नागपुर का पहला अधिवेशन** हुआ। जिसमें 3812 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए जिनमें 480 प्रतिनिधि बरार के थे। इसकी अध्यक्षता **पी. आनंद चार्ल** ने की थी।



**P. Anand Charlu**



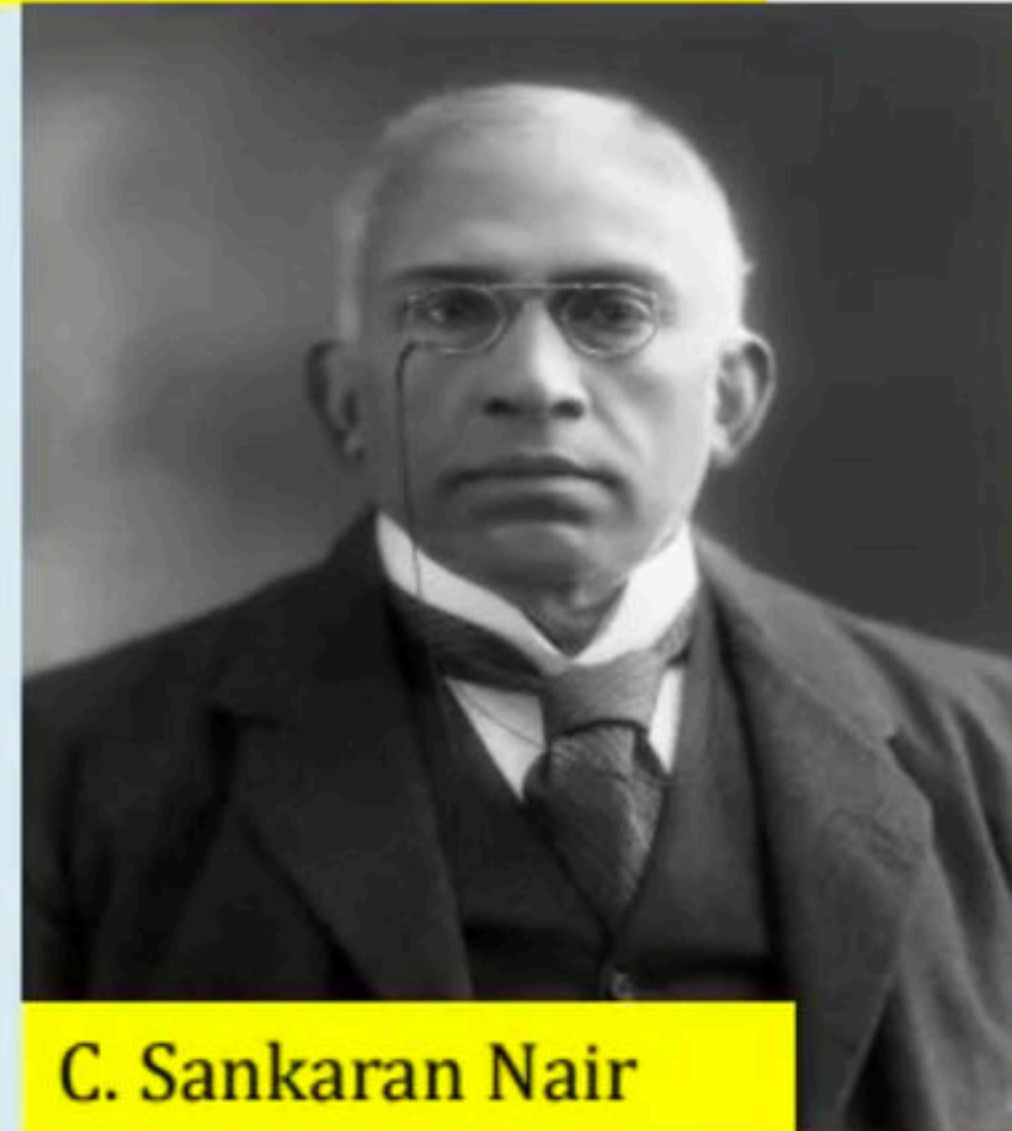
**C. Sankaran Nair**

## Second Phase (1885 to 1905)

- In 1891, the **Seventh session** of the Congress and the first session of **Nagpur** were held.
- In which 3812 delegates participated in which 480 representatives were from Berar. It was presided over by **P. Anand Charlu**.
- Most of the English-knowing lawyers, landlords, businessmen of Madhya Pradesh attended this convention.
- In 1897, the Congress session was held in **Amravati**, from this session a new awakening spread in the whole province.
- In this, proposals for **reforms in Legislative Assemblies, separation of Justice Department, appointment of Indians in high posts etc.** were passed.
- In 1901, on the occasion of the accession of **Edward VII**, Lord Curzon organized a huge court in Delhi. In which the kings and nobles of the country participated.

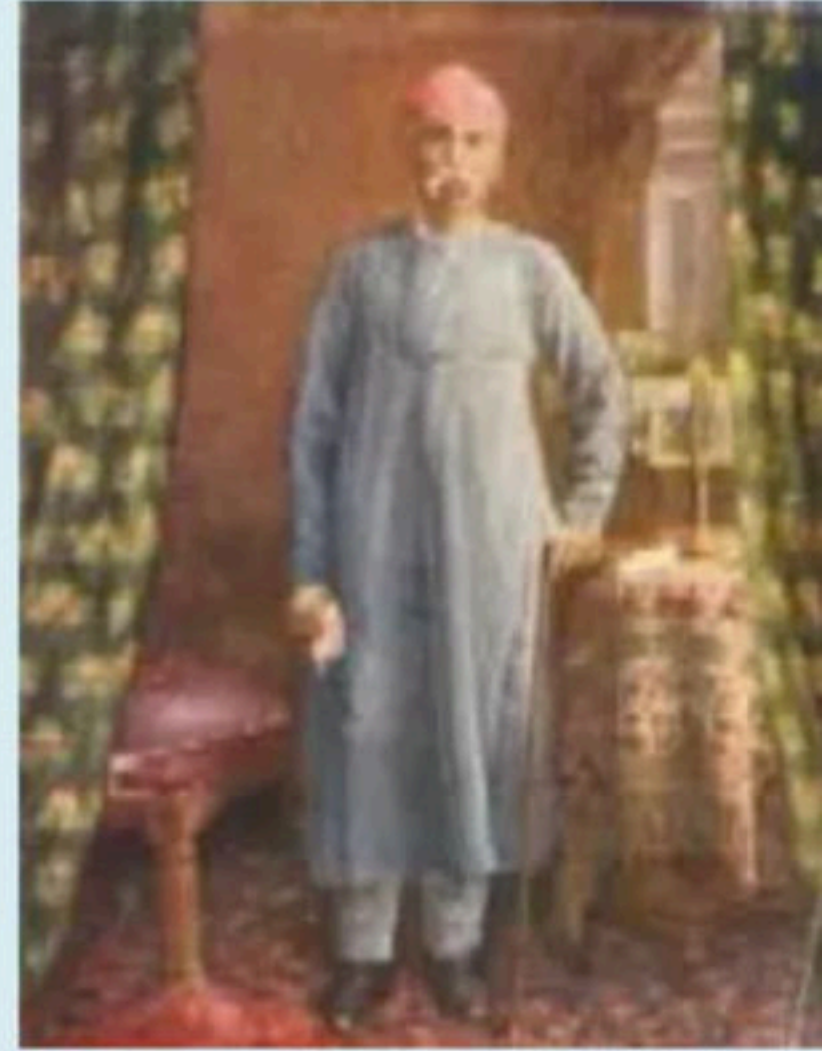


**P. Anand Charlu**



**C. Sankaran Nair**

- In this court, **Seth Gokuldas**, father of famous Padmabhushan Seth Govinddas of Jabalpur, was honored with the title of **Raja**.
- **Raghuveer Singh, Jabalpur; Vishnu Dutt, Shihora; and Madarilal Silundi** also participated in this court.
- In the same year, **Berar** was ruled by the Chief Commissioner of Madhya Pradesh.
- Bal Gangadhar Tilak was sentenced to 18 months in the same year, due to which the whole country as well as the people of Madhya Pradesh expressed great dissatisfaction.



## Second Phase (1885 to 1906)

- इस अधिवेशन में मध्यप्रदेश के अंग्रेजी जानने वाले अधिकांश **वकील, जमीदार, व्यवसायी** सम्मिलित हुये थे।
- सन् **1897** में कांग्रेस का अधिवेशन **अमरावती** में हुआ इस अधिवेशन से सारे प्रान्त में नव जागृति फैली।
- इसमें **विधान सभाओं में सुधार, न्याय विभाग का पृथक्करण, उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति** आदि के प्रस्ताव पास किये गये।
- सन् 1901 में एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण के अवसर पर लार्ड कर्जन ने दिल्ली में एक विशाल दरबार का आयोजन किया। जिसमें देश के राजा एवं राईस सम्मिलित हुए।
- इस दरबार में जबलपुर के प्रसिद्ध पदमभूषण सेठ गोविंददास के पिता **सेठ गोकुलदास को राजा की उपाधि** से विभूषित किया।
- इस दरबार में **रघुवीर सिंह जबलपुर, विष्णुदत्त शुल्क सिहोरा और मदारीलाल सिलौंडी** भी सम्मिलित हुए। इसी वर्ष बरार का शासन मध्यप्रदेश के चीफ कमिशनर के अंतर्गत कर दिया गया।
- बाल गंगाधर तिलक को इसी वर्ष 18 माह की सजा दी गई, जिससे पूरे देश के साथ-साथ मध्यप्रदेश के लोगों ने भी भारी असंतोष प्रकट किया तिलक ने सन् 1896 में ही बहिष्कार का बिगुल बजा दिया था।



## Third Phase (1905-1918)

- In 1915, the **Madhya Pradesh and Berar Provincial Union** was formed.
- After this, **Zilla Parishads(District Council)** were also organized.
- The **first** Zilla Parishad was formed in **Jabalpur** under the chairmanship of **Madan Mohan Malviya**.
- Its executive committee consisted of **Seth Ballabhdas, Shivprasad Verma, Shyamsunder Bhargava, Vyohar Raghuv eer Singh and Govindlal Purohit**.
- Jabalpur's "**Jabalpur Times**" propagated Congress and nationalism.
- Tilak addressed a public meeting in 1916 at **Kaif Khan ki Talaiya**.
- **Tilak** arrived in **Jabalpur** on 7 October 1917 and again on 3 and 4 June 1920.
- Tilak also travelled to **Khandwa and Burhanpur**.
- Due to his inspiration, the foundation of Congress was laid on 6th February 1918.

## Third Phase (1905-1918)



- सन् 1915 में **मध्यप्रदेश और बरार प्रान्तीय संघ** का गठन किया गया। इसके बाद जिला परिषदों का भी आयोजन किया गया।
- प्रथम जिला परिषद का गठन **मदन मोहन मालवीय** के सभापतित्व में **जबलपुर** में हुई।
- इसकी कार्यकारणी समिति में **सेठ बल्लभदास, शिवप्रसाद वर्मा, श्यामसुन्दर भार्गव, व्यौहार रघुवीर सिंह और गोविंदलाल पुरोहित** थे।
- जबलपुर के "**जबलपुर टाइम्स**" ने कांग्रेस व राष्ट्रवाद का प्रचार किया।
- तिलक ने 1916 में **कलफखां की तलैया** में जन सभा को सम्बोधित किया।
- तिलक का 7 अक्टूबर सन् 1917 और फिर 3 व 4 जून 1920 को **जबलपुर** आगमन हुआ। तिलक की **खण्डवा** और **बुरहानपुर** में भी यात्राएं हुईं। इनकी ही प्रेरणा से 6 फरवरी सन् 1918 को निमाण में कांग्रेस की नींव पड़ी।
- सन् 1908 में इन्दौर में **ज्ञान प्रकाश मण्डल** की स्थापना हुई। यद्यपि सरकार द्वारा मण्डल की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दी थी।
- जून सन् 1920 में इन्दौर रेसीडेन्सी क्षेत्र में कांग्रेस की स्थापना हुई।
- सन् 1913 में जबलपुर में '**स्वराज्य संघ**' की स्थापना हो चुकी थी और उस समय तक सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन आदि मूल मंत्रों का प्रचार नगरों और गाँवों में हो चुका था।

## Third Phase (1905-1918)

- **Gyan Prakash Mandal** was established in Indore in the year 1908.
- Although the activities of the Mandal were banned by the government.
- Congress was established in the **Indore Residency** area in June **1920**.
- In 1913, '**Swarajya Sangh**' was established in **Jabalpur** and by that time, the basic mantras like Satyagraha, non-cooperation movement etc. had been propagated in the cities and villages.
- During this, the **First World War** had started, and under the **Defense Act** issued by the British, hundreds of workers of the country were detained, out of which five youths of Madhya Pradesh were detained.
- Among them was **Shri Shailendra Ghosh of Jabalpur**, who was arrested on 16 December 1916.
- During the Swadeshi movement, the Swadeshi movement started in **Jabalpur** to remove poverty, according to **which Shri Kailashchandra Dutt** opened a **Swadeshi Store in Jabalpur**

## Third Phase (1905-1918)

- अंग्रेजों द्वारा नियुक्त डिप्टी कमिश्नर **जिला दरबार** किया करते थे। उनमें स्वराज्य संघ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण डिप्टी कमिश्नर से लिखित रूप में जनता के दुःख दर्द संबंधी प्रश्न पूछते थे और उसका उत्तर प्राप्त करते थे।
- इस दौरान प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो गया था, और अंग्रेजों द्वारा रक्षा कानून जारी किये गये इसके अंतर्गत देश के सैकड़ों कार्यकर्ता नजर बंद किये गये, इनमें से मध्यप्रदेश के पाँच नवयुवकों को नजर बंद किया गया। जिनमें जबलपुर के श्री **शैलेन्द्र घोष** थे, जिन्हें 16 दिसम्बर सन् 1916 को गिरफ्तार किया गया था।
- स्वदेशी आन्दोलन के दौरान जबलपुर में दरिद्रता दूर करने के लिए स्वदेशी आन्दोलन आरंभ हुआ जिसके अनुसार **श्री कैलाशचंद्र दत्त** जबलपुर में एक **स्वदेशी भण्डार** खोला। विदेशी कपड़ों की होली जलायी गई राष्ट्रीय शिक्षा की शालाएं खोली जाने लगी।
- मध्यप्रदेश में जबलपुर इस आन्दोलन का केन्द्र बन गया। सागर जिले में सन् 1874 में "**हितकारणी सभा**" नामक संस्था स्थापित की गई थी, जिसने राष्ट्रीय विचार के प्रसार में अनेक उपाय किये। बंग-भंग आन्दोलन के नेता **अश्विन कुमार दत्त, दादा साहब खापर्डे तथा डॉ. मुन्जे** यहाँ का दौरा किया।
- स्वदेशी आन्दोलन के सिलसिले में कुछ छात्रों ने सन् 1908 में ग्वालियर के उपनगर मुरार में स्वदेशी प्रदर्शनी का आयोजन किया। आतंकवादी गतिविधियों के नाम पर 32 लोगों पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। जिन लोगों पर मुदमा चलाया गया **उनमें डॉ. हरिरामचन्द्र दिवेकर, देसाई बंधु और डॉ खिरवड़कर** आदि थे।

## Third Phase (1905-1918)

- In **Sagar** district, an organization named “**Hitkarni Sabha**” was established in the year 1874, which took many measures in the spread of national thought.
- The leaders of the partition movement **Ashwin Kumar Dutt, Dadasaheb Khaparde and Dr. Munje** visited
- In connection with the Swadeshi movement, some students organised a Swadeshi exhibition in **Murar**, in 1908.
- 32 people were tried for sedition in the name of terrorist activities.
- Among those who were prosecuted were **Dr. Hari Ramchandra Diwekar, Desai brothers and Dr. Khirwadkar** etc.
- In **Mandla-Dindori** district around 1904, **Shri Umeshdutt Pathak** formed an organization of youth.
- He started a movement against **forced labor**.
- They ran 23 cases against the government in the court, due to these efforts, the government had to stop the practice of forced labor.
- These youths continued to do the work of national awakening and Swadeshi propaganda etc.

## Third Phase (1905-1918)

- मण्डला- डिण्डौरी जिला में 1904 के आसपास **श्री उमेशदत्त पाठक** ने नवयुवकों का संगठन बनाया। इन्होंने बेगार प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया।
- इन्होंने शासन के विरुद्ध 23 प्रकरण न्यायालय में चलाये इन प्रयासों से शासन को बेगार प्रथा बंद करनी पड़ी। यही युवक राष्ट्रीय जागरण और स्वदेशी प्रचार आदि का कार्य करते रहे।

# Home rule League



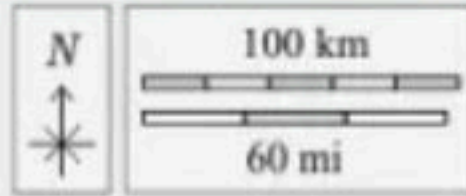
- होमरूल लीग आंदोलन कि मध्य प्रदेश में पहली शाखा **23 अप्रैल 1916** को **जबलपुर** में स्थापित हुई जिसके अध्यक्ष **नाथूराम मोदी** थे इसके पश्चात कटनी जिसके अध्यक्ष **श्री एम हनुमंतराव** थे।
- उनका दौरा **6 फरवरी को खंडवा** से शुरू हुआ।
- इसके अलावा सागर और नर्मदापुरम में भी होम रूल लीग की स्थापना हुई।

# GANDHI JI IN MP

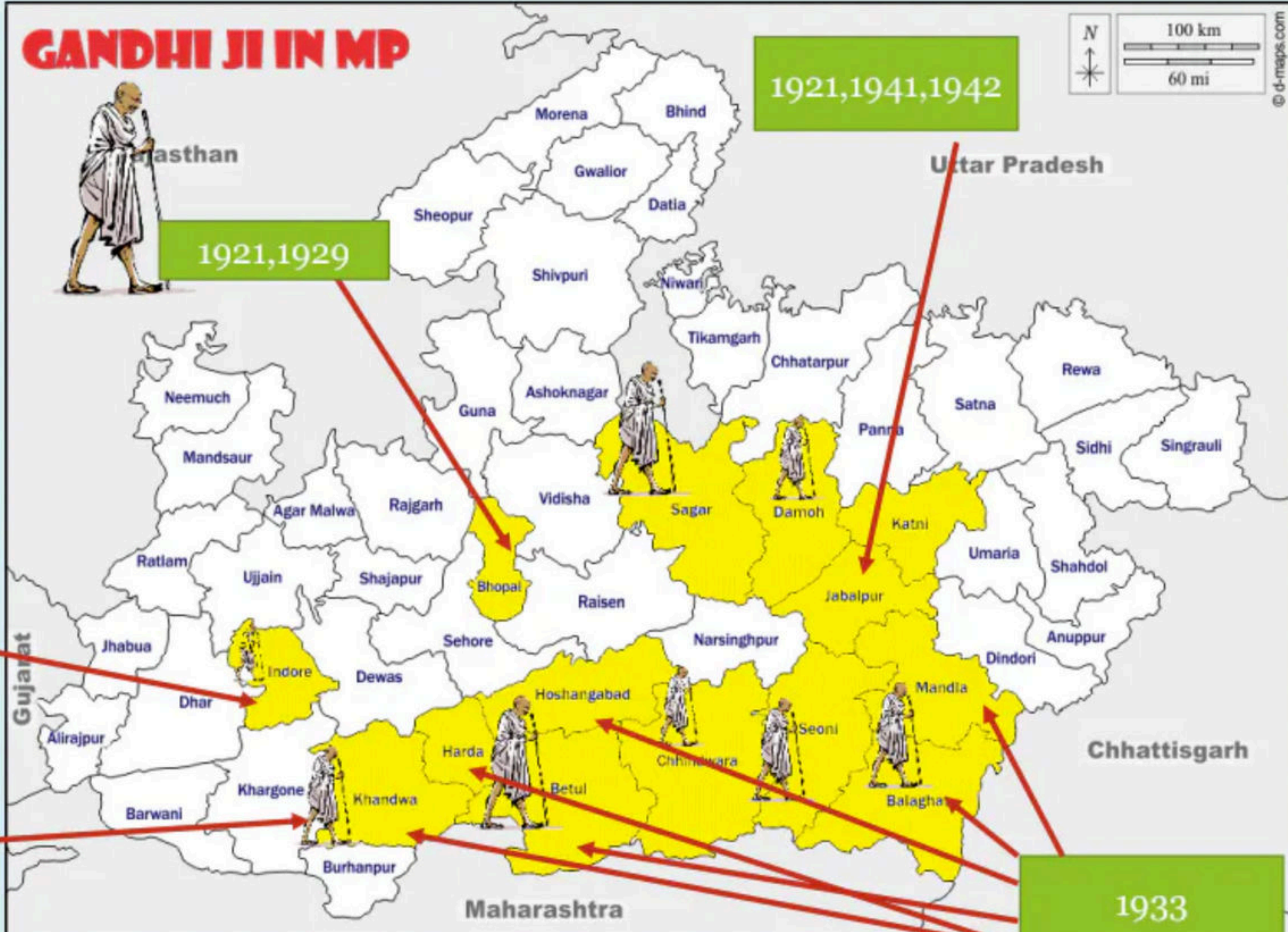


1921, 1929

1921, 1941, 1942



© d-maps.com



# Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

- At a special session in Kolkata in September 1920, Gandhiji proposed a non-cooperation movement
- सितंबर 1920 में कोलकाता के अधिक विशेष अधिवेशन में गांधी जी ने असहयोग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।
- Pandit Vishnu Dutt Shukla, Surendra Lal Tapasvi, Makhanlal Chaturvedi, Thakur Laxman Singh, Chauhan Subhadra Kumari Chauhan, Govindas Pandit, Dwarka Prasad Mishra etc. participated from Jabalpur.
- जबलपुर से अधिवेशन में पंडित विष्णु दत्त शुक्ला ,सुरेंद्र लाल तपस्वी, माखनलाल चतुर्वेदी, ठाकुर लक्ष्मण सिंह, चौहान सुभद्रा कुमारी चौहान, गोविंदास पंडित ,द्वारका प्रसाद मिश्रा आदि शामिल हुए।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

unacademy

- Mahatma Gandhi came to Chhindwara in 1921 and visited Jabalpur on

5 March 1921/1921 में महात्मा गांधी छिंदवाड़ा आये और यहां से 5 मार्च 1921 को जबलपुर का दौरा किया।



- The Kasturba Gandhi and Ali brothers accompanied him.
- उनके साथ कस्तूरबा गांधी और अली बंधु भी थे। जबलपुर के गोल बाजार में गांधी जी का भाषण हुआ, जिसे सुनने हजारों लोग एकत्रित हुए।
- Thousands of people gathered to hear Gandhiji's speech at **Gol Bazaar in Jabalpur**
- The boycott of foreign goods started in Mahakaushal and people left government school and started studying in national school.
- महाकौशल में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार शुरू हुआ और लोगों ने सरकारी स्कूल छोड़कर राष्ट्रीय स्कूल में पढ़ना शुरू किया।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh



- At the same time 'Hitkarini National School' was established in Jabalpur.
- Tilak National School was established in Katni.
- इसी समय जबलपुर में 'हितकारिणी राष्ट्रीय शाला' स्थापित हुई। कटनी में तिलक राष्ट्रीय स्कूल स्थापित किया गया।
- 35 lawyers of Mahakaushal left the advocacy of which **Nathuram Modi, Gyan Chand Verma, Thakur Laxman Singh Chauhan, Shiv Prasad Verma** were important
- महाकौशल के 35 वकीलों ने वकालत छोड़ दी जिनमें नाथूराम मोदी, ज्ञान चंद वर्मा, ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान, शिव प्रसाद वर्मा प्रमुख थे।
- In 1920 Ratauna Satyagaraha launched against govt. Butchery.

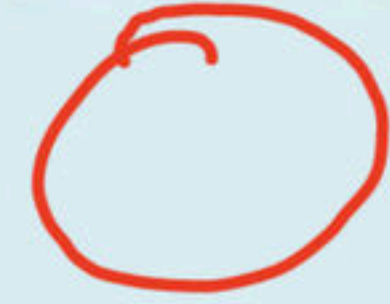
## Non-cooperation movement in Indore

40%

60%

Swarniyg

- Indore was under the Holkar kings in British times. In 1896, the citizens of Indore started celebrating Ganapati festival with the help of Gyan Prakash Mandal.
- इंदौर ब्रिटिश समय में होलकर राजाओं के अधीन हुआ करता था। 18 96 में इंदौर के नागरिक ज्ञानप्रकाश मंडल के सहयोग से गणपति उत्सव मनाना शुरू कर चुके थे।
- But no political party existed in Indore in the name of political party.
- किंतु राजनीतिक दल के नाम पर इंदौर में किसी भी राजनीतिक दल का अस्तित्व नहीं था।
- In 1905, Pandit Arjun Lal Sethi was dismissed from the Holkar service due to his nationalist views.
- 1905 में पंडित अर्जुन लाल सेठी को अपने राष्ट्रवादी विचारों के कारण होलकर सेवा से बर्खास्त कर दिया गया।
- Political activities in Indore were governed by the Provincial Congress Committee Ajmer, whose real name was 'Ajmer Marwar Rajasthan Central India Congress Committee'.



→ Chhawani

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

- असहयोग आंदोलन के समय इंदौर में राजनीतिक गतिविधियां प्रांतीय कांग्रेस कमेटी अजमेर से संचालित होती थी, जिस का वास्तविक नाम 'अजमेर मारवाड़ राजस्थान सेंट्रल इंडिया कांग्रेस समिति' था। 1917 Khadiwala
- An attempt was made to form a political party in Indore in 1921 under which the Indian National Congress was established in the Residency region of Indore, which was headed by **Arjunlal Sethi**.
- इंदौर में राजनीतिक दल के गठन का प्रयास 1921 में किया गया जिसके तहत इंदौर के रेजीडेंसी क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष **अर्जुनलाल सेठी** थे। 1921 → Gandhi Bhawan
- Apart from this, Indore Rajya Praja Parishad was established for the first time in the same year.
- इसके अतिरिक्त उसी वर्ष इंदौर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना पहली बार की गई।
- With the Non-Cooperation Movement it became common practice to demand for the establishment of Responsible Govt.
- असहयोग आंदोलन के साथ उत्तरदाई शासन की स्थापना के लिए होलकर के खिलाफ अपनी मांग प्रस्तुत करना आम बात हो गई।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

unacademy

### Non-cooperation movement in Bhopal

Ali

- The Bhopal region was under the auxiliary Nawabs of the British, here any kind of political activity was strictly prohibited.
- भोपाल क्षेत्र अंग्रेजों के सहायक नवाबों के अधीन आता था, यहां पर किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों की सख्त मनाही थी।
- But many years before the Non-Cooperation Movement, in 1824, Kunwar Chain Singh rebelled against the British and along with his 43 companions attained martyrdom while fighting a battle with the British at Dussehra ground in Sehore.
- लेकिन असहयोग आंदोलन के कई वर्ष पूर्व 1824 में ही कुंवर चैन सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत कर अपने 43 साथियों के साथ सीहोर के दशहरा मैदान में अंग्रेजों के साथ युद्ध लड़ते हुए शहादत प्राप्त की।
- **Arya Samaj** was established in Bhopal in 1890 in the name of **Mitra Sabha** of Bhopal, **Manulal Vishmi** was the prominent leader of Arya Samaj in Bhopal.

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

- भोपाल में आर्य समाज की स्थापना भोपाल के मित्र सभा के नाम से 18 90 में ही कर दी गई थी, **मन्नूलाल विस्मिय** भोपाल में आर्य समाज के प्रमुख नेता थे।
- During his 1921 visit, Mahatma Gandhi came to **Bhopal, Itarsi, Suhagpur** and the people of the place got excited about the non-cooperation movement.
- अपने 1921 के दौरे के समय महात्मा गांधी भोपाल, इटारसी, सुहागपुर आये और यहां के लोगों में असहयोग आंदोलन को लेकर उत्साह उमड़ पड़ा।
- Emphasis was laid on establishment of small scale industry in Bhopal and Holi of foreign cloth was burnt.
- भोपाल में लघु उद्योग की स्थापना पर जोर दिया गया तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई।
- Non-cooperation movement was started under the leadership of **Hakim Syed Hussain, Najja Dada, Syed Hamid Hussain Rizvi** etc.
- **हकीम सैयद हुसैन जी, नज्जा दादा, सैयद हामिद हुसैन रिजवी** आदि के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन शुरू किया गया।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

unacademy

- At this time, **Bai Amman** went from one place to another and worked to awaken the women. She used to deliver secret information to revolutionaries and agitators.
- इसी समय **बाई अम्मान** ने एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर महिलाओं को जागृत करने का कार्य किया। वह क्रांतिकारियों को और आंदोलनकारियों को गुप्त सूचनाएं पहुंचाती थी।
- The foreign cap Holi was lit in 1922 in front of **Kotwali** in Sehore./सीहोर में कोतवाली के सामने 1922 में विदेशी कैप की होली जलाई गई।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

- In 1925, **Vitthal Das Bajaj**, in consultation with Govind Shastri, established the Congress Committee in Bhopal and Khadi Bhandar was also established.
- 1925 में भोपाल में गोविंद शास्त्री के परामर्श से विठ्ठल दास बजाज ने कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और खादी भंडार की भी स्थापना हुई।

## Non-cooperation movement in Gwalior

- The princely state of Gwalior was under the British, like the other princely states, the patriots of the Gwalior state used to go to the neighboring state to participate in the work of the Congress before the establishment of the '**All India Desi State Public Council**' to work in the princely state.
- ग्वालियर देशी रियासत अंग्रेजों के अधीन थी। रियासत में कार्य करने के लिए '**अखिल भारतीय देसी राज्य लोक परिषद**' की स्थापना के पूर्व अन्य रियासतों की तरह ग्वालियर राज्य के देशभक्त कांग्रेस के कार्य में भाग लेने के लिए पड़ोसी राज्य में जाया करते थे।
- **BS Pathik established Saraswati Library** in 1913 for national consciousness.
- राष्ट्रीय चेतना के लिए 1913 में बी एस पथिक द्वारा सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की गई।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh



- Neemuch area was also under Gwalior, where **wearing a Gandhi cap** in the cantonment area was considered treason.
- ग्वालियर के अधीन नीमच क्षेत्र भी आता था, जहां छावनी क्षेत्र में गांधी टोपी पहनकर निकलना देशद्रोह माना जाता था।
- Activities in Neemuch were conducted from Ajmer, where the leaders **Seth Nathumal Chaurasia and Moolchand Agarwal** started the movement, and later many women **Kamalabai Yadav, Champa Devi Yadav, Janaki Devi Agarwal** took special part.
- नीमच में गतिविधियां अजमेर से संचालित होती थी यहां के नेता सेठ **नाथूमल चौरसिया व मूलचंद अग्रवाल** ने आंदोलन प्रारंभ किया और बाद में कई महिलाएं **कमलाबाई यादव, चंपा देवी यादव, जानकी देवी अग्रवाल** ने विशेष भाग लिया।
- **Leeladhar Joshi**, a young guardian of Shujalpur near Shajapur, left the advocacy and joined the national movement.
- शाजापुर के समीप शुजालपुर के युवा अभिभावक लीलाधर जोशी वकालत छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में शरीक हुए।

# Non-cooperation movement in Madhya Pradesh

unacademy

## Non-Cooperation Movement in Bundelkhand

1842

1857

- In 1905 by the British in Bundelkhand, Lord Curzon established the Kitchener Military College at Naogaon Cantonment, where the sons of kings and their relatives can get education.
- बुंदेलखंड में असहयोग आंदोलन बुंदेलखंड में अंग्रेजों द्वारा 1905 में लॉर्ड कर्जन ने नौगांव छावनी में किचनर मिलिट्री कॉलेज की स्थापना की, जिसमें राजाओं के पुत्र को संबंधियों की संताने शिक्षा प्राप्त करती थी।
- In Bundelkhand, people left foreign cloth and started wearing Khaddar cloth.
- At that time, taking the name Khaddar in Bundelkhand was also considered a rebellion.
- बुंदेलखंड में लोगों ने विदेशी कपड़ा छोड़कर खद्दर का कपड़ा पहनना शुरू किया। उस समय बुंदेलखंड में खद्दर नाम लेना भी विद्रोह माना जाता था।
- With the help of Arya Samaj, non-cooperation movement was organized on a large scale in Bundelkhand.
- आर्य समाज की मदद से बुंदेलखंड में बड़े स्तर पर असहयोग आंदोलन चलाया गया।

## Non-cooperation movement in Madhya Pradesh



- **Pandit Parmanand of Bundelkhand** collected funds for revolutionary activities by traveling in countries like Japan, Malaya, America etc. and instilled condolences to India among the people living outside India.
- बुंदेलखंड के **पंडित परमानंद** ने जापान, मलाया, अमेरिका आदि देशों में यात्रा करके क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन इकट्ठा किया और भारत के बाहर रह रहे लोगों में भारत के लिए संवेदना जगाई।

## Jabalpur Jhanda Satyagrah

- The flag Satyagraha took place in Jabalpur in 1923, with Karnadhar **Pandit Sunderlal**.
- 1923 में जबलपुर में झंडा सत्याग्रह हुआ जिसके कर्णधार पंडित सुंदरलाल थे **1919**  
**Trilok Swarniben?**
- After the arrest of Gandhiji, the Satyagraha Inquiry Committee was formed which visited the whole of India and presented its report.
- गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रह जांच समिति गठित की गई जिसने पूरे भारत में दौरा कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की **1920**
- In this committee, there were people like Hakim Ajmal Khan (Chairman), Motilal Nehru, C Rajagopalachari, Vitthalbhai Patel
- इस समिति में हकीम अजमल खान(अध्यक्ष), मोतीलाल नेहरू, सी राजगोपालाचारी, विठ्ठल भाई पटेल जैसे लोग थे
- Municipal Building Town Hall was selected to honor the members of the inquiry committee and hoist the national flag as per the proposal of Kanchadilal, Chairman of Jabalpur Municipality
- जबलपुर नगर पालिका के अध्यक्ष कनछेदीलाल के प्रस्ताव अनुसार जांच समिति के सदस्यों को सम्मान देने और राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए नगर पालिका भवन टाउन हॉल का चयन किया गया

- But the program was not allowed by the Deputy Commissioner/लेकिन डिप्टी कमिश्नर द्वारा कार्यक्रम की इजाजत नहीं दी गई
- The same day a huge public meeting was organized at Tilak Maidan in which C. Rajagopalachari and Dr. Rajendra Prasad called upon the citizens of Jabalpur to come forward to uphold the national flag.
- उसी दिन शाम को तिलक मैदान में विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सी राजगोपालाचारी और डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने जबलपुर के नागरिकों को राष्ट्रीय झंडे का सम्मान बनाए रखने के लिए आगे आने का आह्वान किया
- Pandit Sundarlal announces Satyagraha to honor the flag
- पंडित सुंदरलाल ने झंडे के सम्मान के लिए सत्याग्रह करने की घोषणा की
- On March 18, a procession was taken out under the leadership of Sundarlal, in which Subhadra Kumari Chauhan, Nathuram Modi, Badri Prasad Dubey, Devi Singh Jat, Pyarelal, Gopal Maharaj, Chidambaram Pillai etc.

- 18 मार्च को सुंदरलाल के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया जिसमें सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी, बद्री प्रसाद दुबे, देवी सिंह जाट, प्यारेलाल, गोपाल महाराज, चिदंबरम पिल्लई आदि थे
- On reaching the town hall, Damoh's young man Premchand Jain waved the flag but the soldiers took him off and crushed him
- टाउन हॉल पर पहुंचकर दमोह के नवयुवक **प्रेमचंद जैन** ने झंडा लहराया लेकिन सिपाहियों ने उसे उतारकर पैरों से कुचल दिया



- Jamnallal Bajaj formed an institution to conduct the flag satyagraha and fixed the anniversary of the Jallianwala Bagh massacre, i.e. April 13.
- झंडा सत्याग्रह के संचालन हेतु जमनालाल बजाज ने एक संस्था गठित की और जलियांवाला बाग हत्याकांड की वर्षगांठ का दिन अर्थात् 13 अप्रैल निश्चित किया
- On 13 April, 36 volunteers under the leadership of M R Ansari tried to put the flag before reaching the District Court but were stopped by the Magistrate Govan and lathi-charged.
- 13 अप्रैल को एम आर अंसारी के नेतृत्व में 36 स्वयंसेवकों ने जिला न्यायालय पहुंच झंडा लगाने की कोशिश की लेकिन मजिस्ट्रेट गोवान ने उन्हें रोक लिया और लाठीचार्ज किया
- Similarly Abdul Gani in Sagar, Seth Jethmal in Betul, Thakur Kesar Singh in Narmadapuram
- इसी तरह सागर में अब्दुल गनी, बेतूल में सेठ जेठमल, नर्मदापुरम में ठाकुर केसर सिंह
- This satyagraha lasted for 114 days in which 1265 volunteers from Central Province participated
- यह सत्याग्रह 114 दिन तक चला जिसमें मध्य प्रांत के 1265 स्वयंसेवकों ने भाग लिया

- **Subhadra Kumari Chauhan** was the first woman to be imprisoned in the flag satyagraha
- सुभद्रा कुमारी चौहान पहली महिला थी जो झंडा सत्याग्रह में बंदी बनाई गई
- Dr. Ansari instructed all Provincial Congress Committees to celebrate All India Flag Day on 18 June 1923
- डॉक्टर अंसारी ने 18 जून 1923 को अखिल भारतीय झंडा दिवस मनाने हेतु सभी प्रांतीय कांग्रेस समितियों को निर्देश दिया
- Sardar Patel took over the charge of Satyagraha on 22 July
- 22 जुलाई को सत्याग्रह की बागडोर सरदार पटेल के हाथ में आ गई
- Two 14 year old boys Mohan and Abhimanyu took out the procession but the police arrested them and sent them to jail
- 14 वर्ष के दो बालक मोहन और अभिमन्यु ने जुलूस निकाला लेकिन पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

- On August 18, an agreement was reached between the governor and **Vallabhbhai Patel and Vitthalbhai Patel** under which the flag satyagraha was abolished.
- 18 अगस्त को गवर्नर और **वल्लभ भाई पटेल तथा विठ्ठल भाई पटेल** के बीच समझौता हुआ जिसके तहत झंडा सत्याग्रह समाप्त कर दिया गया

# Constitutional Development in Central Province

- The British Parliament passed the Government of India Act and gave the Viceroy the right to establish in the Legislative Assembly the provinces of all the Chief Commissioners, in view of the Congress's demand to establish an assembly in the Central Province.
- मध्य प्रांत में विधानसभा स्थापित करने की कांग्रेस की मांग के परिपेक्ष में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारत शासन अधिनियम पारित कर सभी चीफ कमिश्नर के प्रांतों में विधानसभा में स्थापित करने का अधिकार वायसराय को दिया।
- Assembly was established in Central Province in November 1913. On December 13, Viceroy Lord Hardinge laid the foundation stone of the Assembly Building in Nagpur.
- नवंबर 1913 में मध्य प्रांत में विधानसभा स्थापित की गई। 13 दिसंबर को वायसराय वायसराय लॉर्ड हार्डिंग नागपुर में विधानसभा भवन का शिलान्यास किया।
- On 11 August 1914, the Chief Commissioner of the Central Province, **Sir Benjamin Robertson**, presiding over the first meeting of the Legislative Assembly, expressed the hope that the people of the province would assist the government in World War I as well.
- 11 अगस्त 1914 को मध्य प्रांत के चीफ कमिश्नर सर बेंजामिन रॉबर्टसन ने विधान सभा की पहली बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह आशा प्रकट की कि प्रांत की जनता प्रथम विश्व युद्ध में भी सरकार को सहायता प्रदान करेगी।

- Election held in November 1923 and Party done well in Election, In the Central Legislative Council Motilal Nehru became the leader of the party whereas in Bengal the party was headed by C.R. Das
- नवंबर 1923 में चुनाव हुआ और पार्टी ने चुनाव में अच्छा प्रदर्शन किया, केंद्रीय विधान परिषद में मोतीलाल नेहरू पार्टी के नेता बने जबकि बंगाल में पार्टी का नेतृत्व सी. आर. दास ने किया।
- In Central Province, Congress leaders E. Raghavendra, Ravi Shankar Shukla, Govind Das, Thakur Chedilal announced to participate in the elections for the Central Principal Central Province Assembly
- मध्य प्रांत में कांग्रेसी नेता ई राघवेंद्र, रविशंकर शुक्ल, गोविंद दास, ठाकुर छेदीलाल ने मध्य प्रधान मध्य प्रांत विधानसभा के होने वाले चुनाव में भाग लेने की घोषणा की
- In November 1923, the Swaraj Dal won 42 out of 70 seats in the Madhya Pradesh and Berar assembly elections.
- नवंबर 1923 में मध्य प्रांत और बरार विधानसभा चुनाव में स्वराज दल को 70 में से 42 सीट मिली
- In the Central Province, the Swaraj Dal was divided into three groups, the Balwant Tambe-headed Berar Swaraj Dal, the BS Munje led Nagpur Swaraj Dal, E. Raghavendra led the Hindi Swaraj Dal.
- मध्य प्रांत में स्वराज दल 3 गुटों में बटा था, बलवंत तांबे के नेतृत्व वाला बरार स्वराज दल, बी.एस मुंजे के नेतृत्व में नागपुर स्वराज दल, ई राघवेंद्र के नेतृत्व में हिंदी स्वराज दल।



## Civil Disobedience Movement ✓

- मध्यप्रदेश में सविनय अवज्ञा आंदोलन दो चरणों में हुआ पहला नमक सत्याग्रह तथा दूसरा जंगल सत्याग्रह 1929
- आंदोलन के साथ ही कांग्रेस की सभी समितियां अवैध घोषित कर दी गई, उन्हें युद्ध समिति में परिवर्तित कर दिया गया

## Mahakaushal

- मध्य प्रांतीय समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र थे। उन्होंने खारे पानी को उबालकर नमक बनाया जो अत्यंत खर्चीला था  
6 अप्रैल 1930 को जबलपुर में कमानिया गेट से रानी दुर्गावती की ऐतिहासिक समाधि तक मध्य प्रांतीय युद्ध समिति के अध्यक्ष सेठ गोविंद दास तथा मंत्री द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया
- Excerpts from the book 'Raj in English' written by the ascetic Sunderlal were read at the meeting place. Which the British government confiscated
- सभा स्थल पर तपस्वी सुंदरलाल की लिखी 'भारत में अंग्रेजी' राज नामक पुस्तक के अंश पढ़कर सुनाए गए। जिसे अंग्रेज सरकार ने जप्त कर लिया

Bandi Jivan

## Civil Disobedience Movement

- The publication of **Kaushal Samachar** of Jabalpur ceased and the Lokmat letter was punished for not making declarations under the Act. A branch of the **Naujawan Bharat Sabha** was also opened in Jabalpur.
- जबलपुर के **कौशल समाचार** का प्रकाशन बंद हो गया और लोकमत पत्र को अधिनियम के अधीन घोषणा न करने पर दंडित किया गया। जबलपुर में **नौजवान भारत सभा** की एक शाखा भी खोली गयी।
- सिरोहा, कटनी, मंडला, दमोह तथा रायपुर नमक कानून तोड़कर प्रांत में आंदोलन को गति प्रदान की गई
- जबलपुर के अनेक व्यक्तियों में भवानी प्रसाद तिवारी, सवाई मल जैन, सत्येंद्र प्रसाद मिश्र, हरदा के महेश दत्त मिश्र ने भाग लिया
- 15 अप्रैल 1930 को रायपुर मध्य प्रांतीय राजनीतिक परिषद की बैठक में द्वारका प्रसाद मिश्र के प्रस्ताव अनुसार हिंदी मध्य प्रांत का नाम बदलकर **महाकौशल** कर दिया गया
- कांग्रेस नेताओं ने प्रतिबंधित साहित्य पढ़कर अपनी गिरफ्तारी देने की कोशिश की। रायपुर के तरुण सत्याग्रही द्वारा तरुण संघ रविशंकर के नेतृत्व में स्थापित किया गया।

## Civil Disobedience Movement

- एक तरुण सभा जबलपुर में सेठ गोविंद दास तथा द्वारका प्रसाद मिश्र के द्वारा स्थापित की गई मिश्र जी ने **हिंदुस्तानी सेवा दल** का गठन कर उसकी शाखाएं प्रांत के विभिन्न प्रांतों में स्थापित की
- जबलपुर में महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा महिला समाज की स्थापना जबलपुर में की गई

## Jungle Satyagrah

- द्वारका प्रसाद मिश्र ने जंगल सत्याग्रह प्रारंभ करने का प्रस्ताव रखा
- जिसकी मंजूरी मोतीलाल नेहरू द्वारा प्रदान की गई, सरकार जंगल सत्याग्रह प्रारंभ करने के पूर्व कांग्रेस के नेताओं को गिरफ्तार करने हेतु बाध्य हो गई
- इन आंदोलनों के द्वारा अनेक आदिवासी नेताओं का उदय हुआ जैसे बैतूल के **गंजन सिंह कोरखु**
- कांग्रेस द्वारा जंगल कानून का विरोध करने का उद्देश्य उन वनवासियों का समर्थन प्राप्त करना था जो इस कानून को पूर्णता समझते थे
- सरकार कृषकों को चारागाह के लिए कर मुक्त भूमि सूखे पत्ते तथा लकड़ी आदि नहीं देना चाहती थी
- 25 जून को **वामन राव लाखे** एक जनसभा में जंगल कानून भंग करने की अपील करते गिरफ्तार किए गए

# Civil Disobedience Movement

- जंगल सत्याग्रह के प्रमुख नेता द्वारका प्रसाद मिश्र थे परंतु उनके गिरफ्तार होने के बाद एम् अस आने ने सत्याग्रह का संचालन किया
- जंगल सत्याग्रह से प्रभावित होकर काटोल तहसील के कांधीली के 1 अधिकारियों ने अपने पद से त्यागपत्र देकर सत्याग्रह में शामिल हुए
- मंडला के नेता गिरिजा शंकर अग्निहोत्री के नेतृत्व में जंगल सत्याग्रह हुआ
- सत्याग्रह के दौरान हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी नामक एक शाखा स्थापित की गई जो प्रतिदिन विस्फोटक सामग्री प्रांत के सत्याग्रह को पहुंचाती थी
- हजारों आदिवासियों ने एकत्र होकर बैतूल के खार, बालाघाट, नीलगढ़, सुखलाल, बंजारी ढाल आदि स्थानों में जंगल सत्याग्रह किया
- बंजारी ढाल में लगभग 500 आदिवासियों की भीड़ पर पुलिस ने गोली चलाई
- 12 सितंबर 1930 को आपात शक्ति अधिनियम जारी किया गया परंतु कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा 16 सितंबर को भी सत्याग्रह प्रयास किया गया
- तीसरे पहलू में शराब की दुकानों पर धरना देना शराब की दुकानें बंद करवाना शामिल था सविनय अवज्ञा के दौरान अधिकारियों ने रॉबर्टसन कॉलेज जबलपुर को बंद करवा दिया

X/CPM → Prohibition

## चरण पादुका सत्याग्रह

- चरण पादुका सत्याग्रह 1930 में जब भारत में नमक सत्याग्रह चल रहा था उसी समय बुंदेलखंड की छतरपुर, अजय गढ़, बिजावर आदि रियासतों में कर विरोधी आंदोलन चला जिसके नेता **रामसहाय तिवारी** थे
- राजाओं के अत्याचार से लड़ने के लिए एक संगठन बना, रंगोली के **कुंवर हीरा सिंह सभापति** तथा पंडित राम सहाय त्रिवेदी मंत्री नियुक्त किए गए
- सरकार से असहयोग करना अर्थात् मांग पूर्ण न होने तक कर ना देना सभा का मुख्य विषय था
- अंग्रेजों ने इसे समाप्त करने के लिए रियासती राजाओं की शांति परिषद गठित करवाई जिसके अध्यक्ष पन्ना के राजा बने
- नौगांव छावनी स्थित पोलिटिकल एजेंट कर्नल फिशर भी आंदोलन से चिंतित था बुंदेलखंड के आंदोलनकारी अपनी समस्याओं को लेकर 4 जनवरी 1931 को एजेंट टू गवर्नर जनरल इंदौर से मिले लेकिन कोई सहयोग प्राप्त नहीं हुआ
- चरण पादुका एक पवित्र स्थान है जहां कहा जाता है कि भगवान श्री राम अपने वनवास के दौरान रुके थे
- 14 जनवरी मकर संक्रांति पर प्रतिवर्ष चरण पादुका में एक मेला लगता है
- 14 जनवरी 1931 को मेले के दौरान सभा पर पोलिटिकल एजेंट फिशर के आदेश पर फ़ौज ने गोलीबारी की
- जिसमें 21 लोग मारे गए और कई घायल हुए
- सुंदरलाल दादाराया, चिर्कुमंतो, धर्मदास मतो को गिरफ्तार किया गया सूरज दुआ को 4 वर्ष एवं अन्य पीस को 3 वर्ष का कारागार दिया गया

## Turiya satyagrah 1931 / तुरिया सत्याग्रह 1931

- Muka Lohar of Turiya and villagers participate in jungle Satyagrah
- तुरिया के मुका लोहार और ग्रामीण सत्याग्रह में भाग लेते हैं
- Tribals disobey British rules of Forest by cutting Grass in Forest
- वन में घास काटकर आदिवासी ब्रिटिश नियमों की अवहेलना करते हैं

# Civil Disobedience Movement

unacademy

Bhopal

- In the Civil Disobedience Movement, **Shanti Devi** of Bhopal along with women staged a sit-in at liquor, opium shops and laid siege.
- सविनय अवज्ञा आंदोलन में भोपाल की शांति देवी ने महिलाओं के साथ मिलकर शराब, अफीम की दुकानों पर धरना दिया और घेराव किया।
- **Rami Bai** also contributed to the Civil Disobedience Movement in Rajgarh.
- राजगढ़ में रामी बाई ने भी सविनय अवज्ञा आंदोलन में योगदान दिया।
- In 1930 Gandhiji visited Bhopal and the movement became very intense in the entire 1930s. Sita Charan Dixit of Bhopal broke the salt law and started the movement.
- 1930 में गांधीजी भोपाल के दौरे पर आए और पूरे क्षेत्र में आंदोलन अति तीव्र हो गया 1930 के। भोपाल के सीता चरण दीक्षित ने नमक कानून तोड़कर आंदोलन शुरू किया

# Civil Disobedience Movement

unacademy

Rewa State

Lalals Singh

1931

- In 1931, **Raghuvansh Pratap Singh** of Baraudh started the movement in Rewa, inspired by the Salt Satyagraha, Jungle Satyagraha.
- 1931 में बरौध के **रघुवंश प्रताप सिंह** ने नमक सत्याग्रह ,जंगल सत्याग्रह से प्रेरित होकर रीवा में आंदोलन शुरू किया।
- With the demands of the formation of Congress, Civil Disobedience Movement, Charkha Sangh, Hindustani Seva Dal and demand of popular rule in Rewa, British political agents arrested Awadhesh Pratap Singh.
- रीवा में कांग्रेस के गठन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, चरखा संघ, हिंदुस्तानी सेवा दल की स्थापना तथा लोकप्रिय शासन की मांगों से ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट बौखला गए और अवधेश प्रताप सिंह को गिरफ्तार कर लिया।
- In 1931, Lala.Yadvendra Singh waved the national flag in Azad India of Nagaur.
- 1931 में लाला यादवेंद्र सिंह ने नागौर के आजाद भारत में राष्ट्रीय झंडा लहरा दिया

# Individual Satyagrahas

- The first Satyagrahi of Jabalpur was Babu Govindadas in personal Satyagraha, he started Satyagraha from Mangela village.
- व्यक्तिगत सत्याग्रह में जबलपुर के प्रथम सत्याग्रही बाबू गोविंददास हुए, उन्होंने मंगेला ग्राम से सत्याग्रह शुरू किया।
- Thakur Niranjan Singh of Narsinghpur, Shyam Sundar Narayan, Sundarlal Tiwari, Shankar Dutt Tiwari etc. performed Satyagraha.
- नरसिंहपुर के ठाकुर निरंजन सिंह, श्याम सुंदर नारायण, सुंदरलाल तिवारी, शंकर दत्त तिवारी आदि ने सत्याग्रह किया।
- Gandhi suspended the movement in December, 1940/गांधी ने दिसंबर, 1940 में आंदोलन स्थगित कर दिया

## Quit India Movement



- After the failure of the Cripps Mission, Mahatma Gandhi started the Quit India Movement./क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया।

## Mahakaushal

- On 9 August, soon after Mahatma Gandhi's arrest, top Jabalpur **leaders Seth Govind Das, Sitaram Jadhav, Pandit Ravi Shankar Shukla, Dwarka Prasad Mishra** etc. were arrested.
- 9 अगस्त को महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के तुरंत बाद जबलपुर के शीर्ष नेता सेठ गोविंद दास, सीताराम जाधव, पंडित रविशंकर शुक्ल, द्वारका प्रसाद मिश्र आदि को गिरफ्तार कर लिया गया।
- Telephone wires were cut, railway tracks were uprooted and government buildings were damaged in response./प्रतिक्रिया स्वरूप जगह-जगह टेलीफोन के तार काटे गए, रेल पटरी उखाड़ दी गई और सरकारी इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया।
- On 14 August, the procession was lathi-charged by the police and a young man **Gulab Singh** was shot./14 अगस्त को निकले जुलूस पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किया गया और एक युवक गुलाब सिंह को गोली लगी।

- In Patan Tehsil, Prabhakar Navalekar, a worker of Forward Block, agitated. Pandit Kunjilal Dubey returning from Mumbai was arrested.
- पाटन तहसील में फॉरवर्ड ब्लॉक के कार्यकर्ता प्रभाकर नावलेकर ने आंदोलन किया। पंडित कुंजीलाल दुबे मुंबई से वापस लौट रहे थे गिरफ्तार कर लिया गया।

## Gwalior

- There was not much protest in Gwalior but Satyagraha, processions continued for 1 month in Ujjain of Gwalior State.
- ग्वालियर में अधिक प्रदर्शन नहीं हुवे लेकिन ग्वालियर रियासत के उज्जैन में 1 महीने तक लगातार सत्याग्रह, जुलुस होते रहे।
- In Mandsaur, Neemuch, Sitaram Katju and other leaders led the movement. '**Azad Hindustan Bulletin**' magazine secretly removed in Neemuch.
- मंदसौर, नीमच में सीताराम काटजू और अन्य नेताओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया। नीमच में गुप्त रूप से 'आजाद हिंदुस्तान बुलेटिन' पत्रिका निकाली गई